शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्राम्य चेतना की पृष्ठभूमि और भाषा शैली

डॉ. रानीबाला गौड़,
एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी,
डी. ए. वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बुलन्दशहर,उ.प्र.
सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

मनीष कुमार,
शोधार्थी–हिन्दी,
डी. ए. वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बुलन्दशहर,उ.प्र.
सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

शोध सारांश

कथा लेखन के क्षेत्र में प्रारम्भ से ही प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराने वाले शिवमूर्ति की कहानियों से हिन्दी कहानी में पुनः कथा रस की वापसी हुई। गाँव ही शिवमूर्ति की प्रकृति लीला भूमि है। इस पर केन्द्रित होकर उनका कथाकार दूर–दूर तक मँडराता है। इनकी कहानियों में ग्रामीण जीवन की ऐसी परिदृश्य झलकती है कि हम पढ़ते समय अपने आपको उस वातावरण में पहुँचा देते हैं। गाँव की मिट्टी की सुगन्ध उनके हर पात्रों पर मिलती है और भाषा मुहावरेदार तद्भव के भण्डार से उक्ति खाटी अवधि जो कि किसी अन्य कथाकारों में इतनी अच्छी प्रतिलब्धता देखने को नहीं मिलती। शिवमूर्ति हिंदी कथा साहित्य में एक ऐसा नाम है, जिसकी अपनी एक अलग पहचान ही नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन के गंभीर सरोकारों और संवेदनाओं की एक विशिष्ट निर्मिति भी है। उनका अनुभव संसार सघन और वर्तमान समय और समाज से जुड़ा है। शिवर्मित जो के यह अनुभव का ही कमाल है कि वह इसी लोक शब्दों को कथा साहित्य में बड़ी बारीकी से विशेषकर पाठकों को एक रसभरी दुनिया में पहुँचा देता है।

Keywords: *शिवमूर्ति , कथा साहित्य, ग्राम्य चेतना, त्रिशूल भारतीय साहित्य और समाज, भाषा शैली*

भाषा पर शिवमूर्ति की पकड़ गजब की है। अपनी भाषा से वे पूरा दृश्य पैदा कर देते हैं। उनके बिंब इतने सजीव होते हैं कि कहानियां पढ़ते हुए आप पुस्तक से निकल कर उनके द्वारा वर्णित गांव में टहल रहे होते हैं। जब वे लिखते हैं कि घर्र..... घर्र..... करके ट्रक स्टार्ट हुआ तो ऐसा लगता है कि ट्रक हमारी आखों के सामने से निकला है। भाषा से दृश्य बनाने की ऐसी क्षमता बहुत कम लोगों में होती है। शिवमूर्ति की छवि प्रबन्धक लेखक की नहीं है। वे अपने आप को प्रक्षेपित नहीं करते। यही कारण है कि उन्हें पुरस्कार भी कम मिले हैं और उनकी चर्चा भी अपेक्षाकृत कम हुई है। लेकिन उनका पाठक वर्ग इतना मजबूत है कि वे शिवमूर्ति को ढूंढ़–ढूंढ कर पढ़ते हैं। अपनी दो तीन रचनाओं के साथ ही उन्होंने प्रसिद्धि का शिखर छू लिया।"[1]

शिवमूर्ति ने अभी तक तीन उपन्यास और दो कहानी संग्रह लिखे हैं। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से गाँव, गरीबी, दलित, और स्त्री की वकालत करते हैं।

उपन्यास– शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन के रचनाकार हैं। इन्होंने 'त्रिशूल', 'तर्पण', और 'आखिरी छलांग' उपन्यासों में लोक–पक्ष की विभिन्न समस्याओं को ओर इंगित किया गया है।

शिवमूर्ति के पास अनुभवों का जो जटिल यथार्थ है उससे उनकी यह समझ मजबूत होती है कि रचना में किसके प्रति संवेदनशील होना है और किसके प्रति क्रूर या सरस। यहां शिवमूर्ति

कुछ उसी तरह का सन्तुलन साधते हैं जैसी रस्सी पर बांस लेकर चलने वाला नट अपने हुनर से साधता है। उनकी रचनाओं में तमाम शेडस हैं। जिससे उनकी लेखीय छवि व्यापक बनती हैं। मैं शिवमूर्ति की रनचाओं की फैन हूं और मुझे उनसे और भी उम्दा रचनाओं की उम्मीद हैं।"[2]

शिवमूर्ति हमारे समय के ऐसे लेखक जिनकी हर रचना का पाठकों को इंतजार रहता है। उनके पाठकों का एक बड़ा और स्थायी वर्ग है। यूँ देखा जाए तो शिवमूर्ति ने थोड़ा लिखा ज्यादा कहा हैं क्योंकि उन्होंने मुश्किल से आठ–दस कहानियाँ और तीन लघु उपन्यास अपनी तीस वर्षों का लेख यात्रा में दिए है पर वे तीन उपन्यास तीन सो पर भारी है और उनकी आठ कहानियाँ आठ हजार पर। तिरिया चस्तिर, कसाईबाड़ा, अकाल दंड, भरतनाट्यम, केसर कस्तुरी और ख्वाजा, ओ मेरे पीर ऐसी कहानियाँ है जिनको पढ़कर लेखक को जानने समझने की एक सहज जिज्ञासा आलोचकों और पाठकों को होना लाजमी है।

शिवमूर्ति की रचनाओं में कथावस्तु और चरित्र इतने प्रबल है कि वे भाषा के किसी भी ऊपरी तामझाम और छलावे के बिना अपने को पाठकों के बची धमाकेदार तरीके से स्थापित कर लेते हैं। शिवमूर्ति ने बहुत कम लिखा है लेकिन बहुत अच्छा लिखा है।"[3]

समाज का निर्माण तथा विकास कैसे होता है? किस दृष्टि से कौन सी बात न्यायपूर्ण है, अन्याय कब और कहाँ व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते है? आँचलिक कथा साहित्य में रेणु के बाद यदि इन महत्वपूर्ण तथ्यों को किसी ने कथा में समेटा है तो वो कथाकार शिवमूर्ति ही है– गाँवों पर लिखने वाले कथाकार शिवूर्मित के अंदर गाँव, उनका घर, उनके खेत, उनकी गाय, उनके अन्दर का किसान कितना और कितने गहरे तक रचा है। मेरा गाँव मेरा घर, मेरा परिवार उनकी आत्मा का कितना बड़ा हिस्सा है। उनका इन सब से जो आत्मिय रिश्ता है वह उनके प्रत्येक उत्तर से यहाँ व्याख्यायित होता है।

शिवर्मित किसान जीवन को अच्छे से जानते हैं। जानने का मतलव ग्राम्य संस्कृति को, वहां के समाज को, परिवार को, वहां के राजनैतिक तंत्र और ढांचे को भली भांति समझते हैं। वह किसानों की कहानियां लिखा रहे हैं, पर समृद्ध की नहीं, वंचित की, शोषित की लिख रहे हैं। वह शोषण की नहीं , शोषित किसानों के जीवन की चुनौतियां लिख रहे हैं।..... उन्होंने ग्रामीण जीवन में दलित स्त्री के शोषण को कई स्तरों पर देखा है। उन्होंने उसके शोषण की वह पीड़ा भी लिखी है जिसे वह अपने ही परिवार में अपने ही लोगों के कारण झेल रही है।" 4इसलिए मैं कहूंगा कि उनकी कहानियों के स्त्री चरित्र बहुत प्रभावशाली हैं जिसमें 'तिरिया चरित्तर' की नायिका को भुलाया नहीं जा सकता। .... शिवमूर्ति के पास बहुत अच्छी भाषा है। ग्राम्य जीवन की, किसान जीवन की ऐसी भाषा इस समय किसी के पास नहीं है। उनके पास तदभव शब्दों का भंडार है। उनकी कहानियो में पद ही पदार्थ का रूप ग्रहण कर लेता है। यही उनकी भाषा का जादू हैं।

शिवमूर्ति का लेखन विशिष्ट है। उन्हें प्रेमचंद और रेणु के साथ रखना ठीक नहीं होगा। उनका अपना स्थान है। अच्छे लेखक हमेशा ही पाठकों और आलोचकों के बीच सराहे जाते हैं। शिवमूर्ति इसके अपवाद नहीं हैं। अपनी कहानियों से उन्होंने अच्छा स्थान बनाया है इसलिए सराहे जाते हैं।.....एक ऐसा लेखक जो अच्छा सार्थक लिखता है।

शिवमूर्ति का उपन्यास 'आखिरी छलांग कल्पना से कहीं अधिक भयावक यथार्थ को पकड़ने की ईमानादर कोशिश है। शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन के भरोसेमंद दृष्य मिलते हैं। कायदे से देखा जाय तो ग्रामीण परिवेश की जीवंत दृश्यात्मकता में पुनर्रचना करना

शिवमूर्ति की ऐसी खासियत है जो समकालीन कथाकारों को उनसे जुडने को बाध्य कर सकती है।"[5]

आजादी के बाद का भारत, वह भी ग्रामीण भारत अपनी तमाम विद्रूपताओं और जटिलताओं के साथ यदि किसी कथाकार के कथा साहित्य में संजीदगी और व्यापकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है तो वह कथाकार हैं शिवमूर्ति। शिवमूर्ति मन के मनोविज्ञान को बखूबी समझते हैं। उन्हें मन की पकड़ है और आस–पास की परिस्थितियों का अनुभव। किसी भी कहानी में व्यक्त परिवेश का चप्पा–चप्पा जैसे उनका देखा हुआ और जिया हुआ लगता है।

शिवमूर्ति की कहानियों में कथ्य जितना प्रभावशाली और मारक है, उनकी भाषा उससे भी ज्यादा बेधक। आदमी की अच्छाई बुराई को पकड़ना और उसे उन्हीं की भाषा में व्यक्त करना जैसा अनुभवी और उस भाषा को गहरायी से जानने वाला विलक्षण कथाकार ही कर सकता है।"[6] शिवमूर्ति की कई कहानियों अपनी पठनीयता के बल पर लम्बे समय तक स्मृति में अपना स्थान बनाए रखती हैं। गांवों को लेकर ऐसी पठनीय कथायें हिन्दी साहित्य जगत में सचमुच बेहद दुर्लभ हैं।.....शिवमूर्ति का साहित्य स्वतंत्रयोत्तर भारत के वर्ण और जाति के पंक में आकंठ धंसे गांवों की हकीकत से परिचित कराने वाला साहित्य है। उनके गांव रहस्यमय कल्पनाओं से आवृत्त भी नहीं हैं जहां इन्सान से ज्यादा ध्यान चिड़िया की टीं टी–टूं टू पर जाय।

उनकी कहानियों में चित्रित गांव में हर तरफ आतंक है और यह आतंक सीथी गोलाबारी या हिंसा से नहीं बल्कि महीन स्तरों पर सरकार–राजनीति और सामंती संस्कृति के बीच से पैदा षड़यंत्रों के सहारे फैलाया गया है।"[7]

'सरी उपमा जोग' कहानी में ऐसा क्या है जो यह कहानी लगभग तीस साल के अंतराल को पाढ़ते हुए आज भी उसी प्रकार ताजा की ताजा है। कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक सहज सरल और तरल कहानी है।.. कहानी को भूल जाओ, लेखक को भूल जाओ लेकिन (इस कहानी की) लालू की माई को कैसे भूला जाय। जहां तक मुझे याद है, इस कहानी को मैने कई–कई बार कई–कई प्रत्रिकाओं या इंटरनेट पर पढ़ा। जब भी पढ़ा तो लालू की माई उसी प्रकार सामने खड़ी थी।"8अपने प्रश्न लेकर। लालू के बप्पा ने भले ही लालू की माई को भुला दिया लेकिन में उसके बाद फिर लालू की माई को नहीं भुला पाया।

'त्रिशूल' भारतीय वर्ण व्यवस्था वाले हिन्दू समाज की जातिवादिता, धार्मिकता और सामंती मानसिकता को तार–तार कर देता है। त्रिशूल की सफलताऔर सार्थकता इस बात में भी है कि वह मुसिलम दलित पिछड़ों के माध्यम से प्रतिरोध और विद्रोह का परिप्रेक्ष्य निर्मित कर जनजागृति का सर्जनात्मक कार्य करता है। इनकी यही जागृति, यही चेतना समानता, मानवीय अधिकारों और मूल्यों के लिए प्रतिरोध का परिप्रेक्ष्य निर्मित करता है जिसे त्रिशूल की घटनाओं और पात्रों के माध्यम से देखा जा सकता है। ऊंची जाति के जनार्दन तिवारी यदि छीटी जाति के बाबा को प्रमाण नहीं करते हैं तो बाबा ही उन्हें कहां प्रमाण करते हैं।

त्रिशूल भारतीय साहित्य और समाज का ऐसा 'टेक्स्ट' है जिसमें वर्ण जाति, धर्म समप्रदाय राजतीति, अर्थनीति और संस्कृति की भेद–मूलक संरचनाएं आपस में इस तरह गुंथी हुई है कि भारतीय लोकतंत्र भी उन्हीं के सहारे 'सरवाइव' कर रहा है, 'भेद' को बनाए रखकर। लेकिन जब तक भेद रहेगा तब तक अन्याय भी रहेगा।"[9] शिवमूर्ति शब्दों के पारखी हैं। शब्दों को चुनने की और उसे अपनी कथा में बरतने की उनकी तमीज काबिले तारीफ है। शिवमूर्ति की भाषा में निहित बेधकता, सम्प्रेषणीयता, सांगीतिकता, चित्रात्मकता सांकेतिकता, ध्वन्यात्मकता आदि गुणों के मूल में उनकी शब्द शक्ति को सूंघने महसूसने की क्षमता

है। वे एक साथ अभिधा, लक्षणा और व्यंजना का मारक इस्तेमाल करने वाले कथाकार हैं।... अपने सुदीर्घ रचनाकाल में अत्यन्त संक्षिप्त रचनाओं की सूची प्रस्तुत करने वाले शिवमूर्ति के कथासाहित्य ने आज के दौर में एक दुर्लभ सी लगने वाली ख्याति और विश्वसनीयता दोनों अर्जित किया है। यही कारण है कि अल्प लेखन के बावजूद शिवमूर्ति हिन्दी कथा साहित्य में विश्वसनीयता के किसी श्हालमार्क की तरह है।"[10]

शिवमूर्ति हिन्दी साहित्य में एक ऐसा नाम है जिसकी अपनी एक अलग पहचान ही नहीं बल्कि जो सामाजिक जीवन के गंभीर सरोकारों और संवेदनाओं की एक विशिष्ट निर्मिति के चिंतक भी हैं। शिवमूर्ति की कहानियों में ग्रामीण जीवन की विषमताएं और अर्न्तविरोध नम्न यथार्थ के रूप में अभिव्यकित पात हैं। यहां जाति व्यवस्था की गहरी जड़ें मानवीय सम्बन्धों को छिन्न–छिन्न करती दिखायी देती है।"यहाँ स्त्री और दलित को लगातार गहन यातना और विवशता में जीना पड़ता है। शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन की जटिलताओं और विषमताओं को अभिव्यक्त करने में सिद्धहस्त कथाकार हैं।

इनकी भाषा में अभद्र गालियों, मुहावरों व आक्षेपों का नैसर्गिक व भरपूर इस्तेमाल होता है। कलात्मक आलोचना की दृष्टि से देखा जाय तो शिवमूर्ति एक नया ही सौन्दर्य शास्त्र गढ़ते नजर आते हैं। वे अपने स्त्री कथा पात्रों को उतने ही सुन्दर अथवा दीन हीन रूप में हमारे सामने लाकर खड़ा कर देते हैं जैसे वे वास्तविक जगत में होते हैं। इन कथा पात्रों में बाल–विवाह की त्रासदी व कुपोषण तथा गरीबी की शिकार बहुएं हैं, पत्नियाँ है, मायें हैं, वृद्धायें हैं।"

शिवमूर्ति की कहानियां स्त्री विमर्श की कहानियां है।..... उनका स्त्री विमर्श समाज की उन निम्नवर्गीय औरतों के शारीरिक व आत्मीय सौन्दर्य, दैहिक ताप व उत्पीड़न जिजीविशा, प्रतिरोध, राग द्वेश परिवारिक क्लेश आदि पर केनिद्रत हैं जो दूर दराज के गांवों में घर जवार की सीमाओं में कैर होकर अपना जीवन गुजार रही हैं। इनमें अनपढ़, गरीब, विस्थापित बाल ब्याहता, श्रमिक शोशित व उपेक्षित वर्ग की साधारण स्त्रियों का जिंदगीनामा है, जिसमें न हार की फिक़ है, न जीत की। बस संघर्ष ही संघर्ष है, वेदना ही वेदना है।

शिवमूर्ति की कहानियां दलित असिमता को पुनर्परिभाषित करती है। वे दलित अस्मिता के बारे में कहते ही नहीं , उसे सिद्ध भी करते हैं। शब्द दर शब्द, पंक्ति दर पंक्ति, कहानी दर कहानी, वह निरन्तर दलित और विंचत वर्ग की अस्मिता का साहित्य रचते रहे हैं।..... शिवमूर्ति ने कम लिखा है लेकिन थोड़े में ही बहुत लिखा है। जरूरत है, उसमें गुंथे हुए सूत्रों की बिलगाने की, उन्हें समझने की। वह अपनी बिल्कुलअलग तरह की कहानियों की दुनिया के फक्कड़ और बिना पगड़ी के सरदार हैं।

शिवमूर्ति ग्रामीण जीवन के विश्वसनीय कथाकार हैं। किसान जीवन को अपनी रचना का विषय उन्होंने किसी साहित्यिक प्रवृत्ति या साहित्यक आकांक्षा के तहत नहीं अपनाया है। वे ग्रामीण और किसान जीवन के सहज जानकार हैं। उनका व्यकितत्व रहन बोली बानी– सब कुछ ग्रामीण और किसानी है, एक आंतरिक व्यक के साथ। जितने विनम्र हैं उतने ही दृढ़। यह भी लगता है कि उन्हें अपने लेखन के प्रति आत्मविश्वास है। इस आत्मविश्वास का आधार रचित वस्तु की गहरी सूक्ष्म और व्यापक जानकारी है। निजी फर्स्ट हैंड जानकारी।

'कसाई बाड़ा' और 'तिरिया चरित्तर' से लेकर 'आखिरी छलांग' तक का जो परिदृश्य है वह समकालीन भारत का यथार्थ रूप हैं। परिवार, थाना, कोर्ट, कचेहरी, स्त्री दलित, किसान, धर्म, साम्प्रदायिकता, खेती, नौकरी सबसे जो एक समग चित्र निर्मित होता है, वह असुन्दर और दागदार है। सगे सियार भरे पड़े हैं। थाना दारोगा के

वास्तविक चित्र कई कहानियों में हैं।" शिवमूर्ति ने झूठ को रूपों में चित्रित कर यह बताया है कि यह सर्वत्र फैला हुआ है।

जब वे (शिवमूर्ति) गोष्ठियों में बोलते हैं तो उनका सीधे सादे पूरबी गंवई मानुष का चोला उतर जाता है और हम अपने एक जहीन और सुलझे हुए बुद्धिजीवी को पाते हैं जिसका अध्ययन मनन और चिंतन दो टूक और वस्तुनिष्ठ हैं। हां, कटु आलोचना, पीठ पीछे निन्दा और किसी को भी नीची नजर से देखने का व्यसन उनमें नहीं है। वैसे भी साहित्यकारों के सभी फितरती ब्यसनों से वे दूर हैं, सिवाय एक के। इस हातिमातई में बस एक ही कमजोरी है– नारी सौन्दर्य के प्रति अदम्य आकर्षण। सुन्दर स्त्री को देख कर वे मन ही मन प्रणाम करते हैं। विधाता की किसी भी अनुपम कृति की सहराहना न करना इनकी दृष्टि में अक्षम्य अपराध है।

शिवमूर्ति की कहानियां अपनी अन्तर्वस्तु और कथारस के लिए ज्यादा प्रशंसित हुई हैं।..... शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों से सिद्ध किया कि कथारस वह चीज है जिसके साथ रचबस कर अन्तर्वस्तु पाठक की आत्मा तक उतर जाय और उसे रोमांच और सौन्दर्य से भर दे। या पाठक को ऐसी बेचौनी और तनाव में ले जाय कि उसकी नींद ही उड़ जाय।" आप यकीन करिए, तिरिया चरित्र कहानी पढ़ने के बाद मैं और मेरी पत्नी उस रात ठीक से सो नहीं पाये थे।

शिवमूर्ति में प्यार और अनुराग का वह गहरा भाव ही रहा है जो उनकी कहानियों में केवल मनुष्य के प्रति छलकता दिखायी पड़ता है बल्कि मनुष्येतर जीव जंतुओं के प्रति भी ममत्व और नेह में कोई कमी दिखलायी नहीं पड़ती। इस सन्दर्भ में अपने समकालीनों के बीच शिवमूर्ति एक ऐसे विलक्षण कथाकार हैं जिनमें संवेदना की अनंत गहरायी है। इसके साक्ष्य उनकी कहानियों में सहज ही उपलब्ध है।

शिवमूर्ति अपने समय के अत्यन्त महत्वपूर्ण कथाकार हैं। किसी भी नये हिन्दी पाठक या अहिन्दी भाषी पाठक को हिन्दी साहित्य से स्नेह हो जायेगा यदि उसे शुरू में शिवमूर्ति की कहानियां पढ़ने को मिल जाये। उनकी सभी कहानियां जीवन के अनुभवों से छन कर निकली हुई है इसलिए उन्हें पढ़कर आप एक साथ भौचक आहत, उदास और स्पनिदत होते हैं तथा निखर जाते हैं। आप भौचक होते हैं क्योंकि वे जिस संवेदना को प्रशस्त करते है उसका मर्म आपके भीतर गड़ जाता है। आप निखर जाते है क्योंकि साहित्य, कला आपको उदात्त कर देती है। उनकी कहानियों से आप अपने समकालीन समाज. राजनीति, गरीबी, जातिवाद, छलप्रपंच और शोषण के अनेकानेक रंग और तरीकों से वाकिफ हो जाते हैं। जिस कथाक्षेत्र से शिवमूर्ति आते हैं वहां उनका किसी से कोई मुकाबला है ही नहीं। वहां फिलहाल वे अकेले राज करतेनजर आ रहे हैं।

शिवमूर्ति के उपन्यासों और कहानियों से यह साबित होता है कि हिन्दी कथा साहित्य प्रेमचंद की परम्परा को भूला नहीं है। भारतीय ग्रामीण जीवन की अनेक त्रासदियों के कथाकार हैं शिवमूर्ति, एक ओर उनकी कहानियों में गांव की स्त्रियों की अपार यातना का दर्द है तो दूसरी ओर उपन्यास में किसान जीवन की तबाही के कारणों ओर रूपों की पहचान। किसानों की आत्महत्या की समस्या उनके उपन्यास आखिरी छलांग की केन्द्रीय समस्या है।

गहरी अंतर्दृष्टि एवं उचित परिप्रेक्ष्य के अभाव में जहां समाज व राजनीति के बड़े मुददे भी सरलीकृत होकर रह जाते हैं। वहीं सरल भी दिखने वाली सतह की सच्चाइयां कैसे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य प्राप्त करती हैं, इसका एक उदाहरण शिवमूर्ति का उपन्यास 'त्रिशूल' प्रस्तुत करता है। कलेवर में क्षीणकाय होने के बावजूद साम्प्रदायिकता और सामाजिक न्याय के मुद्दे को

रोजमर्रा की घटनाओं के माध्यम में शिवमूर्ति ने प्रामाणित अभिव्यकित दी हैं। उपन्यास में महमूद की त्रासदी भारतीय समाज के सेकुलर माडल की त्रासदी है।.....बाबरी मस्जिद से जुड़ी घटनाओं एवं मंडल कमीशन की पृष्ठभूमि पर केन्द्रित यह औपन्यासिक कथा भारतीय जीवन में साझी संस्कृ ति एवं सामुदायिक जीवन में आती दरार को अत्यन्त बेबाकी के साथ उद्घाटित करती है। वर्णाश्रम व्यवस्था एवं ब्राह्माणवादी संस्कृति की नम्न सच्चाइयों का खुलासा करने के साथ–साथ उपन्यासकार ने नयी शक्तियों के उभार के संकेत भी दिएहैं।"शिवमूर्ति की लोकभाषा, लोकमुहावरे वे लोकजीवनमें गहरी पैड हैं. उनकी ये सारी खूबियां नई अर्थछवियों के साथ त्रिशूल में उपस्थित हैं।

शिवमूर्ति ने नवे दशक में जिन गांवों को स्थापित किया वे आस्ट्रेलिया के गांव नहीं हैं। वे आज के गांव हैं। वहां के लोगों की निराशा, संघर्ष, जिजीविशा और रागद्वेष उनकी कहानियों में वास्तविक रूप में आये हैं, जैसा बहुत कम लेखकों के कथा साहित्य में पाया जाता है।... शिवमूर्ति का कथा साहित्य किसी सिफारिस का मोहताज नहीं है। उनका योगदान ग्रामीण और निम्नवर्ग के पात्रों को उठाने में है, जिन्हें और लोगों ने नहीं उठाया।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मेरे साक्षात्कार, शिवमूर्ति, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2013
2. स्वातंत्र्योतर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन, विवेकी राय (लोकभारती प्रकाशन)
3. सृजन का रसायन, शिवमूर्ति, रजाकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2014
4. ग्रामीण यथार्थ और शिवमूर्ति की कहानियाँ, प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन
5. शिवमूर्ति –केशर कस्तूरी, पृ. 122
6. रामचन्द्र तिवारी – हिन्दी गद्य साहित्य, पृ. 409 – 410
7. वागर्थ पत्रिका, जून 2014 ,पृ. 24
8. मंच पत्रिका, शिवमूर्ति विशेषांक (जनवरी, मार्च 2011), पृ. 43
9. ममता कालिया– लमही, अक्टूबर–दिसम्बर 2012
10. शिवमूर्ति का कथा संसार प्रख्यात आलोचक रविभूषण – मंच जनवरी – मार्च 2011